अजायब बानी

मासिक पत्रिका

फरवरी-2025

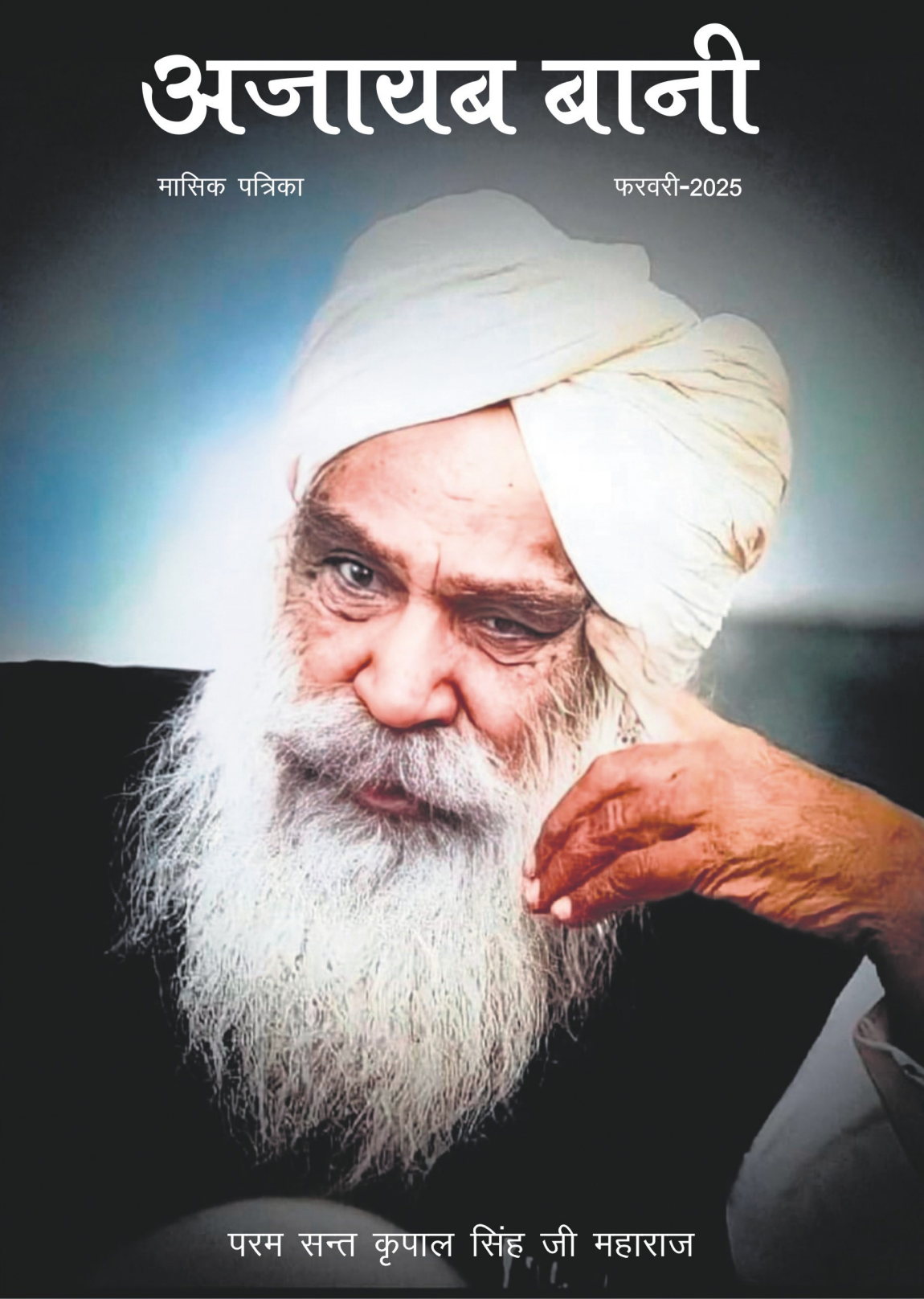

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–बाइसवां | अंक–दसवां | फरवरी–2025

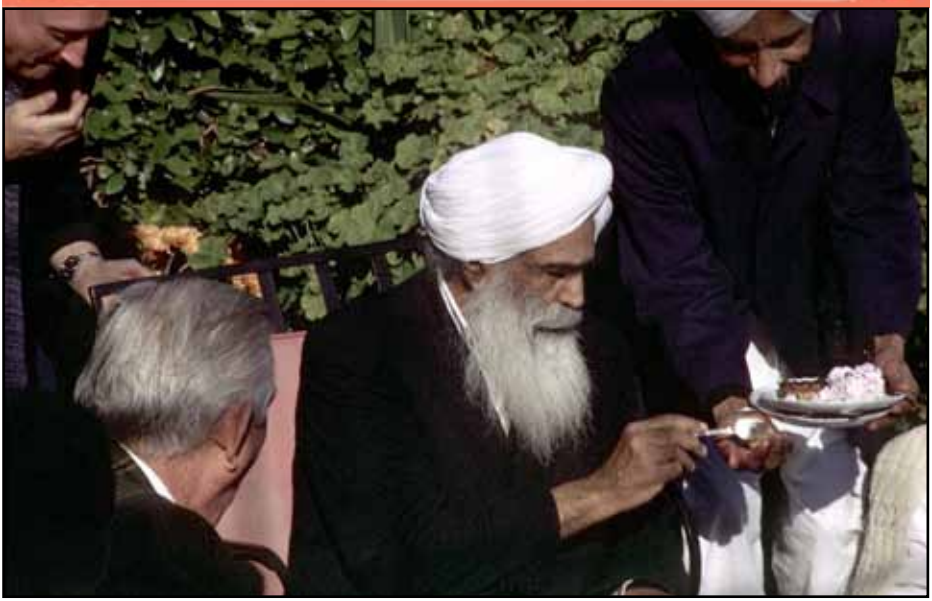

3 परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविंद से
सोच

7 सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
परमात्मा प्यार का समुंद्र है

27 परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
भजन–सिमरन कब करना चाहिए

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039
जिला –श्री गंगानगर (राजस्थान)
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 275 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

महाराज कृपाल सिंह जी द्वारा एक संदेश

सोच

कभी किसी के लिए बुरा न सोचें, बुरा सोचने से किसी का नुकसान हो सकता है। जब हम किसी के बारे में बुरा सोचते हैं तो उस तक वैसी ही **सोच** तार की तरह पहुँचती है। आप किसी को अपनी सोच न भी बताएं तो भी उस तक वह सोच अनदेखी किरणों की तरह पहुँच जाएगी। हम जैसा सोचना चाहते हैं वैसा ही सोचते हैं हमारी **सोच** अच्छी होनी चाहिए।

एक बार बादशाह अकबर को उसके मंत्री ने कहा कि हमें किसी के बारे में सोचने से पहले बहुत ध्यान देना चाहिए। अकबर ने मंत्री से पूछा कि तुम इस बारे में क्या जानते हो? मंत्री ने कहा कि चलिए हम बाहर चलते हैं। जब दोनों बाहर गए उन्होंने कुछ दूरी पर एक आदमी को अपनी तरफ आते हुए देखा। मंत्री ने बादशाह से कहा, ''आप उस आदमी के बारे में अपने मन में कुछ सोचें और जब वह आदमी आपके पास आए तो आप उससे पूछ सकते हैं कि उसके मन में आपके बारे में क्या विचार आया? आपने सिर्फ उसे देखना और उसके बारे में सोचना है?'' बादशाह ने अपने मन में सोचा कि इस आदमी को गोली से उड़ा देना चाहिए।

जब वह आदमी बादशाह के पास पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा, ''जब तुमने मुझे देखा तब तुम्हारे मन में क्या विचार आया?'' वह आदमी बोला, ''महाराज! मुझे माफ कर दीजिए, आपको देखकर मेरे मन में विचार आया कि मैं मुक्का मारकर आपका सिर तोड़ दूं।'' जब आप दूसरे के बारे में बुरा सोचते हैं तो उसके मन में भी वैसे ही विचार आएंगे। इसलिए हमें कुछ भी बोलने से पहले **सोच** लेना चाहिए अगर हम किसी के बारे में बुरा सोचें या उससे कहें कि तुम बेवकूफ हो! अगर कोई हमारे साथ भी इस तरह का ही व्यवहार करे तो आपस में झगड़ा ही होगा।

जो इंसान के मन में होता है वह वही बोलता है, बुरे विचार शब्दों का रूप ले लेते हैं। शब्दों की जड़ ही बुरे विचार हैं फिर उन्हीं शब्दों की वजह से लड़ाई–झगड़ा होता है इसलिए किसी की भावनाओं को शब्दों, विचारों और कर्मों से ठेस न पहुँचाए। चाहे किसी तीर्थ स्थान पर दर्जनों आदमी इकट्ठे काम कर रहे हों अगर वे एक–दूसरे के बारे में बुरा सोचना शुरू कर दें तो इसका असर सामने वालों पर अनदेखी किरणों द्वारा पहुँच जाएगा और उनके मन में भी बुरे ख्याल आएंगे।

हमारा शरीर परमात्मा का मंदिर है और मन परमात्मा का सिंहासन है अगर हम परमात्मा के सिंहासन को मैला कर देंगे तो परमात्मा उस पर कैसे बैठेंगे? जिनका मन साफ है वह परमात्मा की दया से परमात्मा को देख सकते हैं। मन को साफ करने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम किसी का बुरा न सोचें, किसी को बुरा न कहें और किसी का बुरा न करें।

अगर आश्रम में भी कोई आदमी किसी के लिए बुरा सोचता है तो उसकी **सोच** उस आदमी तक पहुँच जाती है। यह प्लेग की बीमारी की तरह है जैसे प्लेग से पीड़ित चूहा जहाँ भी जाता है वह वहाँ प्लेग की बीमारी फैला देता है।

हमें परमात्मा के कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए अगर हम अपने मन में दूसरों के लिए अच्छे विचार लाते हैं तो उनके मन में भी हमारे लिए अच्छे विचार आएंगे। दूसरे लोगों के बारे में बुरा सोचकर हम परमात्मा के मंदिर रूपी शरीर को मैला कर रहे हैं। हम बाहर से साफ–सुथरे नजर आते हैं लेकिन हमारा मन मैला है। हम सभी एक ही मशीन के अलग–अलग पुर्जें हैं अगर मशीन का एक भी पुर्जा खराब हो जाए तो वह काम करना बंद कर देती है, हमें अपने आपको सुधारना चाहिए।

आप जब भी किसी के बारे में सोचें तो अच्छा ही सोचें क्योंकि परमात्मा के रिश्ते से हम सब भाई–बहन हैं। परमात्मा सबके मन में है,

हमारा शरीर परमात्मा का मंदिर है अगर हम किसी के बारे में बुरा सोचेंगे तो हम अपने मंदिर को मैला कर रहे होंगे। गुरु साहब अपने एक शब्द में प्रार्थना करते हुए कहते हैं:

सुखी बसे मेरो परिवारा, सेवक सिख सभे करतारा।

ऐसा तभी हो सकता है जब हम किसी के बारे में बुरा सोचना और बुरा कहना छोड़ दें अगर हमें किसी के बारे में कुछ पता चलता है तो उस बात को अपने तक ही रखें। हमें दूसरों को सुधारने की जरूरत नहीं, हमने पहले खुद को सुधारना है अगर हमें किसी के ऊपर दया आती है तो उसे चुपके से जाकर बता देना चाहिए कि वह कहाँ गलती कर रहा है?

अगर हम किसी अन्धे इंसान को अंधा कहें तो यह बात उसके दिल को ठेस पहुँचाएगी। हमें चाहिए कि उससे प्यार से पूछें कि तुम्हारी आँखों की रोशनी कैसे चली गई तो उसे बुरा नहीं लगेगा। मन के विचारों को प्रकट करने के बहुत से तरीके होते हैं। बात करना भी एक कला है। परमात्मा का मिलना मुश्किल नहीं इंसान का बनना मुश्किल है, परमात्मा तो इंसान की तलाश में रहता है।

जब मैं पहले टूर पर लंदन गया वहाँ मैं दो बच्चों से मिला, जिनकी उम्र सात–आठ साल होगी। उन्हें 'शब्द–धुन' दी गई। मैंने उन बच्चों से पूछा कि तुम्हें क्या चाहिए? वे बोले कि हम सन्त बनना चाहते हैं। मैंने कहा, ''तुम्हें सन्तमत के रास्ते पर डाल दिया गया है। अच्छे इंसान बनो, तरक्की करो हो सकता है कि तुम्हें सन्त बनने के लिए चुन लिया जाए।''

परमात्मा हमेशा सच्चे इंसान की तलाश में रहता है ताकि परमात्मा का काम चलता रहे, परमात्मा ने अपने काम के मुताबिक इंसान को चुनना है। इसके लिए हमें प्रार्थना नहीं करनी चाहिए क्योंकि प्रार्थना या प्रचार करने से हमें वह स्थान नहीं मिल सकता। यह इंसान के हाथ में है ही नहीं। आखिर एक दिन हर किसी को पूर्ण बनना है। हर सन्त का बीता

हुआ कल है और हर पापी का भविष्य तभी अच्छा हो सकता है जब वह किसी के लिए बुरा सोचना और बुरा करना छोड़ दे।

सन्त हमें सिखाते हैं कि हमने खुद को देखना है कि हम कहाँ खड़े हैं? हमारा दिल–दिमाग साफ होना चाहिए। हमें अपनी गलती के लिए माफी माँग लेनी चाहिए और दूसरों की गलती को माफ करके भूल जाना चाहिए। अगर कोई आपको बुरा कहकर चोट पहुँचाए तो उसे माफ कर दें। माफी एक ऐसा अमृत है जो सारी गंदगी दूर कर देता है। माफी बुरे विचारों को धो देती है। माफ करके ही आप परमार्थ के रास्ते पर जा सकते हैं।

एक बार एक आदमी ने भगवान बुद्ध के पास जाकर उन्हें बहुत भला–बुरा कहा। जब रात होने लगी और वह अपने घर वापिस जाने लगा तो भगवान बुद्ध ने उस आदमी को बुलाकर कहा, ''प्रिय दोस्त! अगर कोई किसी के लिए उपहार लाए और वह उस उपहार को स्वीकार न करे तो उस उपहार का क्या होगा?'' वह आदमी बोला, ''जो उपहार लाया था वह उसी के पास रह जाएगा।'' भगवान बुद्ध बोले, ''तुम मेरे लिए जो उपहार लाए थे मैंने उसे स्वीकार नहीं किया।''

हमें अपने अंदर अच्छे विचार लाने चाहिए। ऐसा करने से हमारी **सोच** बदल जाएगी। हमनें सिर्फ दिखावा ही नहीं करना बल्कि अपने जीवन में भी ढ़ालना है।

सन्त कहते हैं, ''जो लोग हमारे कहने के मुताबिक जीवन जीते हैं हम उनके सेवक हैं हम हर तरह से उनकी सेवा करेंगे।'' पिता की बात मानने वाला बेटा पिता को प्यारा होता है। सन्तों को सब पता होता है वे बाहरी दिखावे पर नहीं जाते।

यह आपको दिल से दिल की बात करके समझाई गई है, सफल होने के लिए अपने मन को पवित्र रखें। ***

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

परमात्मा प्यार का समुंद्र है

13 मार्च 1994 गुरु नानकदेव जी महाराज की बानी जयपुर

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार करता हूँ, जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। आपके आगे गुरु नानकदेव जी महाराज का छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। गुरु नानकदेव जी महाराज संसार में उस वक्त प्रकट हुए जब पंजाब के अंदर दुनिया परमात्मा को भूल चुकी थी, ज्यादातर लोगों का विश्वास रीति-रिवाज और कर्मकांड में ही था।

अगर कोई घर-बार छोड़कर थोड़ी बहुत साधना करने लग जाता तो वह लोगों को डराने लगता, बद्दुआ देने लगता कि अगर आप हमारी पूजा नहीं करेंगे तो आपका नुकसान हो जाएगा। उन लोगों के पास 'नाम' नहीं था जिससे उनमें नम्रता आती।

गुरु नानकदेव जी महाराज खुद ही परमात्मा रूप संसार में आए। बचपन में उनके माता-पिता इस कोशिश में रहे कि हमारा बच्चा किसी न किसी तरह दुनिया के कारोबार में लगे। आपको पता है कि जो सन्त मालिक की तरफ आते हैं उनके ऊपर सिर्फ माया का बारीक आरजी पर्दा होता है लेकिन अंदर से उनका ख्याल परमात्मा की तरफ ही होता है। उन्हें पशु चराने में लगाया गया, उन्होंने बाहर जाकर पशुओं को मालिक के सहारे छोड़ दिया और समाधि में लीन हो गए।

पिता ने देखा कि यह पशु नहीं चराता तो उन्हें व्यापार करने के लिए कुछ रूपये दिए। हम सब कह जरूर लेते हैं लेकिन यह अपने बस में नहीं होता उनके लिए धुरधाम से यही हुक्म होता है। उन्हें आगे कुछ साधु मिले तो उन्होंने सोचा कि इससे बढ़िया व्यापार और क्या हो सकता है, कौन

सा सौदा सच्चा हो सकता है। उन्होंने उस पूंजी से साधुओं को खाना खिला दिया और कुछ वस्त्र लेकर दे दिए। जब वे खाली हाथ घर आए तो पिता नाराज हुए। उन्हें और भी कई कामों में लगाया गया लेकिन उनका दिल दुनिया के कामों में नहीं लगता था क्योंकि वे दुनिया के लिए नहीं आए थे। घरवालों ने सोचा कि कहीं यह बीमार न हो।

वे अपनी हिस्ट्री में लिखते हैं कि तन के ऊपर कपड़ा अच्छा नहीं लगता था, खाना खाने का दिल नहीं करता था। एक दिन मैं बाहर खेत में जा रहा था तो किसी ने मुझे भूतना कहा कि यह इस समय मारा–मारा फिर रहा है। कोई मुझे पागल कहता था कि यह कालू का बेटा नानक है घर के लोग इसका इलाज नहीं करवाते अगर इसके ऊपर कोई तावीज वगैरह करवाएं तो यह ठीक हो जाएगा। आप कहते हैंः

कोई आखे भूतना को कहे बेताला, कोई आखे आदमी नानक बेचारा।

उनका जीजा, लोधी खान पठान के तोशेखाने का बड़ा अफसर था। आखिर माता–पिता ने सलाह करके गुरु नानकदेव जी को उसके पास भेज दिया। वहां आपको नौकर रखवा दिया लेकिन जो मालिक के रंग में रंगे होते हैं उनका ऐसी नौकरियों में दिल कब लगता है। आखिर लोगों ने शिकायत की कि यह लोगों को तेरा मोदी खाना लुटवा रहा है, जब हिसाब लगाया गया तो सामान पूरा निकला।

आखिर गुरु नानकदेव जी ने बेई नदी में डुबकी लगा दी और कुछ दिन दुनिया को नहीं मिले। लोगों ने सोचा कि वह तो डूबकर खत्म हो चुका है। बहुत सारे इतिहासकारों ने लिखा है कि वहीं जाकर इन्हें ज्ञान मिला, परमात्मा के दर पर बख्शिश हुई। भाई गुरदास जी कहते हैंः

पहले पाई बक्श दर पिच्छो दे गुरु घाल कमाई।

बेशक वह कुल मालिक ही संसार में आए लेकिन दुनिया को डेमोंस्ट्रेशन देने के लिए उन्होंने कठिन तपस्या की। छोटी उम्र में उनकी शादी की गई

बच्चे पैदा हुए लेकिन ऐसे मालिक के प्यारों का गृहस्थ में कहां दिल लगता है। उनका दोस्त मरदाना सारंगी बजाने में माहिर था, आप उसे साथ लेकर दुनिया की यात्रा करने के लिए चल पड़े कि मैं दुनिया को उपदेश देने के लिए आया हूँ। उस समय उन्होंने काफी लम्बी–चौड़ी यात्राएं की, सोई हुई दुनिया को नाम के रास्ते पर डाला। उन्होंने वलि कंधारी को नाम के सीधे रास्ते पर डाला। वलि कंधारी को रिद्धि–सिद्धियों का बहुत अंहकार था। उन्होंने वलि कंधारी से कहा कि फकीरों का काम कहर बरसाना नहीं, फकीरों का काम शन्ति देना है।

परमात्मा प्यार का समुंद्र है, जो इस समुंद्र में डुबकी लगाऐगा अपने आपको खत्म करेगा वही परमात्मा से बख्शिश प्राप्त करेगा। आपके आगे उनका छोटा सा शब्द रखा जा रहा है। आप प्यार से कहते हैं कि कोई वक्त था जब संसार में कोई जीव–जन्तु पैदा नहीं हुआ था। न कोई पहाड़ था, न कोई दरिया था, न कोई समुंद्र था और न कोई वनस्पति ही थी। न कोई आकाश था न कोई पाताल था, दुनिया के अंदर धंधुकारा था।

परमात्मा की मौज उठी परमात्मा ने सचखण्ड रच दिया,नीचे के मंडल रच दिए फिर देवता रचे, इंसान रचे, वनस्पति रची, पहाड़ वगैरहा सब कुछ ही उनकी रचना है। माली पौधे लगाकर बेखबर नहीं होता उसे फिक्र होता है कि ये बड़े होकर फल देंगे, मैं इनकी अच्छी तरह परवरिश करूं। परमात्मा ने सोचा कि ये कहां जाएं? वह देवताओं में देवता और इंसानों में इंसान बना। वह खुद ही अपना भेद देने के लिए कामिल इंसान का तन धारण करके संसार में आया, सन्त चारों युगों में आते हैं।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि उसने अपना भेद अपने आप गाया। गाय–भैंस हमें समझा नहीं सकती। देवी–देवता हमने देखे नहीं होते। इंसान ही हमें अच्छे तरीके से समझा सकता है इसलिए उसने अपनी जोत कामिल इंसान में रखी, वह परम सन्त के रूप में संसार में आए।

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

कबीर साहब कहते हैं कि मैं चारों युगों में आया। सतयुग में मेरा नाम सतसुकृत था, त्रेता में करूणामय, द्वापर में मुनिन्द्र और कलयुग में मेरा नाम कबीर पड़ा। हम उनका अनुराग सागर पढ़कर देखें तो पता लगता है कि किस युग में उन्होंने किस–किस को नाम दिया और कहां–कहां गए बेशक इशारा है लेकिन सुबूत मिलते हैं।

परम सन्त संसार में आते हैं उसके बाद परमात्मा उनकी जगह पर आठ–दस महात्मा और भेज देते हैं ताकि दुनिया में प्रकाश होता रहे। जब उसी जगह आलिम घट जाते हैं और मजहब का रूप धारण कर लेते हैं तो वह ताकत न किसी परिवार के साथ बंधी होती है न किसी गद्दी के साथ बंधी होती है वह ताकत स्वतंत्र है। **जो परमात्मा से प्यार करता है परमात्मा उसी का है। जो उसके लिए जगह बना लेता है वह उसके अंदर जाकर बैठ जाता है।**

आपे करता पुरख बिधाता।। जिन आपे आप उपाय पछाता।।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि उस परमात्मा ने अपने आप ही यह रचना रची है। वह इसे पैदा करके खुद ही अपनी पहचान देने के लिए किसी कामिल इंसान में जोत रखता है।

आपे सतगुर आपे सेवक आपे सृस्ट उपाई हे।।

उसने अपने आप ही यह सृष्टि पैदा की है आप ही सतगुरु है और आप ही शिष्य है। यह बहुत समझने वाली बात है कि अध्यापक और स्टूडेंट में क्या फर्क होता है? अध्यापक के अंदर वह विद्या जाग चुकी होती है, स्टूडेंट अभी कोशिश में लगा हुआ है। जब अध्यापक की सोहबत करके स्टूडेंट की विद्या जाग जाती है तो दोनों में कोई फर्क नहीं रहता।

इसी तरह जब तक हम कमाई करके अंदर नहीं जाते उस शब्द रूप गुरु को अपने अंदर प्रकट नहीं कर लेते तब तक हम अपने आपको अलग

समझते हैं। जब हम गुरु की शिक्षा पर चलते हैं गुरु को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं फिर हमारे और सन्त के बीच कोई भिन्न–भेद नहीं रहता। एक ज्योत सचखण्ड से आती है दूसरी उसके प्रकाश में मिलकर सचखण्ड पहुँच जाती है अगर हम दीपक से दीपक जलाएं तो उनके प्रकाश में कोई भिन्न–भेद नहीं होता, कोई पहचान नहीं सकता कि पहले कौन सा दीपक जला था और बाद में कौन सा दीपक जला। आप कहते हैं कि वह अपने आप ही अपनी पहचान बताने के लिए आ गया है।

आपे नेड़ै नाहीं दूरे।। बूझेह् गुरमुख से जन पूरे।।

आप प्यार से कहते हैं कि वह आप ही नजदीक है आप ही दूर है। जिसकी चाबी मरोड़ता है, वह सन्तों के पास जाकर नाम लेकर नाम की कमाई करके उसे अपने अंदर ही प्रकट कर लेता है। वह गुरुमुखों के नजदीक है और मनमुखों से दूर रहता है। **परमात्मा प्यार का समुंद्र है।** परमात्मा चोरों–ठगों में भी है लेकिन वे परमात्मा के नजदीक नहीं हुए उन्होंने परमात्मा को अपने शरीर के अंदर प्रकट नहीं किया। हम सोचते हैं कि परमात्मा मंदिर में गुरुद्वारे में या सुनहरी गिरजाघर में बैठा है लेकिन जो हरिमंदिर उस परमात्मा ने बनाया है जिसमें वह परमात्मा खुद बैठा है हम उसके अंदर कभी दाखिल नहीं हुए। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैंः

हरमंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होइ।

अगर कोई सच्चे से सच्चा हरिमंदिर या ठाकुर द्वारा है तो वह आपका शरीर है। प्यारेयो, जब भी मालिक से मिलने का ज्ञान होगा इस शरीर के अंदर जाकर ही होगा। यहां आकर हम सब भूल जाते हैं कि हम अपने हाथों से मालिक के रहने की जो जगह बनाते हैं उनमें धूप जलाते हैं, दिन–रात बहुत सफाई करते हैं वहां बैठकर कोई बुरा कर्म नहीं करते। हम सोचते हैं कि हमने यह जगह परमात्मा के रहने के लिए बनाई है, यह परमात्मा का घर है। परमात्मा ने जो पांच–छह फुट का पुतला बनाया है जिसमें वह

खुद बैठा है हमने कभी इसकी सफाई के बारे में सोचा तक नहीं। हम इस शरीर में मीट–शराब डालते हैं कभी इससे बुरे कर्म करते हैं।

आप सोचकर देखें कि हम गंदी जगह पर बादशाह के आने की उम्मीद कर सकते हैं क्या वह इतनी गंदी जगह पर आकर बैठेगा? परमात्मा तो सच्चा–सुच्चा, ऊँचा, प्योर है। वह विषय–विकारों में लिपटे हुए हमारे इस शरीर में जिसके अंदर हम रोज मीट शराब डालते हैं जिसे हमने कब्रिस्तान बनाया हुआ है क्या बादशाह इसमें आकर बैठेगा?

शेख तकी जब हज करके वापिस आ रहा था तब उसका मिलाप तुलसी साहब के साथ हुआ। उसने अपना तम्बू तुलसी साहब के मकान के आगे लगा लिया, उनके साथ काफी चर्चा हुई। तुलसी साहब ने कहा देख भई, हज पैरों के तले से शुरु होकर सिर की चोटी तक है इसकी दो मंजिलें हैं, एक आँखों तक है दूसरी आँखों से ऊपर है। क्या कभी इस मस्जिद को साफ किया है? वहां शेख तकी ने तुलसी साहब से बहुत सारे सवाल किए और तुलसी साहब जवाब दे रहे हैं। आखिर शेख तकी तुलसी साहब से नामदान प्राप्त करके उनका शिष्य बना। तुलसी साहब कहते हैंः

दिल का हुजरा साफ कर जाना के आने के लिए।
ध्यान गैरों का उठा उसके बिठाने के लिए।
एक दिल लाखों तमन्ना उस पर भी ज्यादा हवस।
और ठिकाना है कहां उसके बिठाने के लिए।
गैर मंदिर मस्जिदों में जाए सद अफसोस है।
कुदरती मस्जिदों का साकिन दुख उठाने के लिए।
कुदरती महराब में चढ़ शौक से आ रही सदा तेरे बुलाने के लिए।।

तू इस मस्जिद की सफाई की तरफ ध्यान दे, तू इसमें दाखिल होकर देख कि वह परमात्मा चौबिस घंटे तेरे अंदर आवाज दे रहा है। हम बाहर की सफाई करने में लगे हैं, जहां परमात्मा बैठा है उस जगह हमने कभी सफाई का जिक्र ही नहीं किया। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सच्चो उरे सबके ऊपर सच उचार।

गुरु नानकदेव जी ने जहां हमें रूहानियत की तालीम दी है वहां अखलाकी तालीम भी दी है। बेशक परमात्मा से ऊपर कोई नहीं, सब मंडल परमात्मा से नीचे हैं। काल की शक्तियां नीचे हैं लेकिन सच्चा–सुच्चा जीवन इससे भी ऊँचा है। महात्माओं को पता है अगर हमारा जीवन सच्चा–सुच्चा नहीं होगा तो हम अंदर परमात्मा तक कैसे पहुँच सकते हैं।

आपे नेड़ै नाहीं दूरे।। बूझेह् गुरमुख से जन पूरे।।

अरब के इलाके में मक्का है। कहां अमरनाथ की गुफा है कहां बद्रीनाथ है, कहां हुजूर साहब है? आप देखें कि परमात्मा गुरुमुखों को नजदीक से नजदीक अपने अंदर ही बता देता है कि मैं आपके पास ही हूँ।

तिन की संगत अहनिस लाहा गुर संगत एह वडाई हे।।

आप प्यार से कहते हैं कि जिन्होंने गुरु की कृपा से परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लिया है वे सहज अवस्था को प्राप्त करके गुरुमुख बन गए हैं। गुरु की संगत जब भी मिले लाहा ही लाहा है लेकिन यह संगत तब मिलती है जब परमात्मा अपनी मेहर करे, हमारे मस्तक में लिख दे कि इसे पूरे गुरु की संगत मिलेगी। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

सन्त सभा कोट गुरु पूरे धुर मस्तक लेख लखाए।

धुर मस्तक में लिखी होने की वजह से ही हमें गुरु की सभा मिलती है। कबीर साहब कहते हैंः

सन्त की गैल न छोड़िए, मारग लागा जाए।
पेखत ही पुनित होए, भेटत जपिए नाओ।

वे जहां जाकर बैठते–उठते हैं संगत करते हैं, उनका पीछा न छोड़ें। उनसे बातचीत हो तो वे कहते हैं कि प्यारेया, नाम जप अगर उन्होंने प्यार भरी दृष्टि डाल दी तो तेरा बेड़ा पार है। कबीर साहब कहते हैंः

जम का ठेगा बुरा है वह नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया तिन्हु लिया बचाए।

साधु की संगत में भागकर वही जाता है जिसे डर लगता है कि इस दुनिया के बाद मैंने जहां जाना है वहां मेरा कोई संगी साथी है? हम देखते हैं कि पति चला जाता है तो पत्नी हाथ मलती रह जाती है, लड़का चला जाता है तो माता–पिता रोते रह जाते हैं।

जयपुर में बहुत से प्रेमी, राजाओं के महल देखने के लिए जाते हैं क्या कभी ख्याल किया कि किसी समय इनकी कितनी शान–शौकत थी। इनमें रहने के लिए कितना पैसा खर्च किया आज उनका क्या है? ये महल यहीं रह गए, आखिर अच्छा या बुरा जो कर्म कमाया वही साथ गया। कबीर साहब कहते हैं, ''मुझे गुरु मिल गए उन्होंने मुझे बचा लिया नहीं तो मेरी भी यही हालत होनी थी।''

जुग जुग संत भले प्रभ तेरे।। हर गुण गावह् रसन रसेरे।।
उसतति करेंह् परहर दुख दालद जिन नाहीं चिंत पराई हे।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि सन्त युगों–युगों में आते हैं उनका रास्ता बंद नहीं होता। वे कौमें इस रास्ते को बंद कर देती हैं जिन कौमों में परमात्मा से मिलने का शौक नहीं होता, विरह तड़प नहीं होती। वे जरूर कह देते हैं कि अब कोई गुरु पीर नहीं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जुगो जुग जुगो जुग पीढ़ी चलेंदी।
जुग जुग भक्त उपाया पैज रखदा आया।

हर युग में परमात्मा अपने प्यारे भक्तों को संसार में भेजते हैं। सन्त कर्मों से बरी होते हैं उन्हें कोई चिन्ता नहीं होती। सन्तों को पता है कि हमारी चिन्ता करने वाला परमात्मा है लेकिन उन्हें जो कष्ट आते हैं वे हम जीवों के कर्म होते हैं। सन्तों को अपने उन प्यारों की चिन्ता है जो उनकी संगत में आ जाते हैं कि इन्हें किस तरीके से नाम की तरफ लगने के लिए

समझाया जाए कि आप दुनिया को नहीं, दुनिया बनाने वाले को मांगें। उन्हें दिन–रात हमारी चिन्ता है।

ओय जागत रहैं न सूते दीसेंह्।। संगत कुल तारे साच परीसेंह्।।

अब गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सन्त आकर सोते नहीं है। सन्तों की आत्मा कभी भी आँखों से नीचे नहीं आती चाहे वे चल–फिर रहे हैं, बैठे हैं चाहे सो रहे हैं। उनका शरीर, प्राण जरूर सोते हैं लेकिन उस समय भी वे ऊपर के मंडलों में किसी को 'नाम' दे रहे होते हैं, किसी की संभाल कर रहे होते हैं। हम देखते हैं कि सन्त सोए हुए हैं। प्यारेयो, वे तो हम सोते हुओं को जगाने के लिए आए हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

जागो जागो सुत्यो

आप दुनिया की तरफ जाग रहे हैं और परमात्मा की तरफ सो रहे हैं अगर सन्त ही आकर नींद के दोस्त बन जाएं दुनिया तो पहले से ही सो रही है। कबीर साहब कहते हैं कि वे सिर्फ शरीर को आराम देने के लिए ही सोते हैं। शरीर हड्डियों, चमड़े और माँस का बना हुआ है इसे थोड़े बहुत आराम की जरूरत पड़ती है। जो उनकी सोहबत में आते हैं वे उन्हें तार लेते हैं। वे जिन्हें तारते हैं उन सबको मालिक की याद में लगा देते हैं, अंदर से उनकी आत्मा को जगा देते हैं।

कलमल मैल नाहीं ते निरमल ओय रहैं भगत लिव लाई हे।।

परमात्मा मैल से ऊपर हैं उन्हें काम, क्रोध, ईष्या, द्वेत की मैल नहीं लगी होती। वे निर्मल हैं अगर हम भक्ति करके परमात्मा को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो हम भी पवित्र हो जाते हैं।

बूझो हर जन सतगुर बाणी।। एह जोबन साँस है देह पुराणी।।

गुरु साहब प्यार से कहते हैं कि पता नहीं कब मौत की घंटी बज जानी है, काल ने गला दबा देना है अगर थोड़ा सा बीमारी का झटका लग गया

तब यह देह नहीं रहेगी। अब वक्त है, वह बानी जो सचखण्ड से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रही है उसे समझें। गुरु नानक साहब ने कहा है कि हम उस बानी को न आँखों से देख सकते हैं न कानों से सुन सकते हैं, वह अनहद है जो हद से ऊपर सचखण्ड से आ रही है।

अनहद बानी पूंजी सन्तन हत्थ रखी कुंजी।

उस बानी के साथ कैसे जुड़ना है? महात्मा हमें उस बानी के साथ जोड़ने के लिए ही संसार में आते हैं।

आज काल मर जाईऐ प्राणी हर जप जप रिदै ध्याई हे।।
छोडो प्राणी कूड़ कबाड़ा।। कूड़ मारे काल उछाहाड़ा।।

पहले गुरु नानकदेव जी महाराज मालिक के प्यारे भक्तों की महिमा करके आए हैं। अब आप कहते हैं कि अब आप वे चीजें छोड़ दें जो चीजें हमारे और परमात्मा के बीच रूकावट बनती हैं। मैंने आपको पहले भी बताया था कि सन्त आपको रूहानी तालीम के साथ–साथ अखलाकी तालीम भी देते हैं। जब तक हमारा अखलाक ठीक नहीं होगा तब तक हम अंदर तरक्की नहीं कर सकते। हम दुनिया को धोखा दे लेते हैं लेकिन वह परमात्मा हमारे अंदर बैठा है उसे न किसी ने धोखा दिया है और न कोई धोखा दे ही सकता है। हम सोचते बाद में हैं वह पहले ही सुन लेता है।

राम झरोखे बैठकर सबका झारा ले।
जाकी जैसी चाकरी ताकौं तैसा दे।

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर आप परमात्मा की भक्ति करना चाहते हैं परमात्मा से मिलना चाहते हैं, सन्तों की शिक्षा पर चलना चाहते हैं तो आप बेअर्थ की बातें जैसे झूठ बोलना छोड़कर सच बोलें क्योंकि सच आखिर सच होता है। पराया खाना छोड़ दें अपना कमाकर खाएं। हम सोचते हैं कि झूठ को कौन पूछता है या किसी का खाने को कौन पूछता है? प्यारेयो, एक–एक सांस का लेखा लिया जाता है, ग्राही

ग्राही का हिसाब लिया जाता है। आप किसी गलतफहमी में न रहें। धर्मराज उनकी खबर लेता है कि दुनिया में क्या–क्या अत्याचार किए अगर आप परमात्मा की भक्ति करना चाहते हैं तो इस मैल को छोड़ दें।

साकत कूड़ पचेंह् मन हौमैं दुह मारग पचै पचाई हे।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि साकत वह है जो किसी का किया हुआ नहीं जानता। परमात्मा ने हमारे ऊपर बहुत बड़ा अहसान किया है हम उसका बदला किसी भी तरह नहीं चुका सकते। परमात्मा ने हमें मुफ्त का तन दिया है, रहने के लिए धरती दी है, पीने के लिए पानी दिया है, रोशनी दी है, हवा दी है और उसने उपहार के तौर पर हमें बच्चे दिए हैं, उसने हमसे कौन सी चीज छिपाकर रखी है।

हम कह देते हैं कि परमात्मा है ही नहीं हमने उसकी भक्ति नहीं करनी। आप सोचें, हम इससे ज्यादा क्या साकत हो सकते हैं? साकत उसे कहते हैं जो किसी के किए हुए अहसान को न जाने। साकत हौमें अहंकार में होता है, वह यह सोचकर चलता है कि जो मैं कहता हूँ वही ठीक है। हमारे और परमात्मा के बीच अगर कोई रूकावट है तो वह हौमें अहंकार की है कि मेरा इतना बड़ा समाज है, मैं इतना पढ़ा–लिखा हूँ, मैं इतना धनी हूँ, मेरे अंदर ये गुण हैं। यह हौमें–अहंकार है।

हौमें दीर्घ रोग है दारू भी इस माहे।
कृपा करे जे आपणी गुरु का शब्द कमाहे।

हौमें–अहंकार ला–इलाज मीठी बीमारी है। आजकल समाजों में अहंकार है जो हम एक दूसरे को नीचा दिखाते हैं और अपने आपको ऊँचा समझते हैं। जहां दिन है, वहां रात है। जहां बीमारी है, वहां दवाई भी है। अगर परमात्मा कृपा करता है तो हमें किसी महात्मा की सोहबत–संगत बख्शता है। महात्मा कृपा करते हैं तो वे हमारे दिल में ख्वाहिश पैदा करते हैं कि हम भी रास्ता प्राप्त करके परमात्मा की भक्ति में लगें।

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

छोडो निंदा तात पराई।। पढ़ पढ़ दझेंह् सांत न आई।।

अब आप प्यार से कहते हैं अगर आप परमात्मा की भक्ति करना चाहते हैं तो किसी की निन्दा न करें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''निन्दा जितना कोई और गुनाह नहीं है, आजकल समाजों के पास निन्दा का ही तोपखाना है। चोर को चोर कहना भी गुनाह है।''

निन्दा भली काहू की नाहीं मनमुख मुग्ध करन।
मुँह काले तिन निन्दका नर्के घोर पवन।
निन्दक ऐहला जन्म गंवाया, पहुंच न सके काहूं बातें।

किसी भी सन्त–महात्मा ने यह नहीं कहा कि निन्दक को कोई सहारा मिलता है। निन्दक परमात्मा के दरबार में नहीं जा सकता और न ही इस संसार में शोभा पाता है। सबके अंदर परमात्मा है, **परमात्मा प्यार का समुंद्र है।** आप ईष्या करना छोड़ दें अगर हम ईष्या करते हैं तो परमात्मा के साथ करते हैं। पढ़ने का फायदा तभी है अगर हम खुद निन्दा करना छोड़ दें, परमात्मा की भक्ति करें और दूसरें लोगों को भी इस तरफ लगाएं।

आमतौर पर हम लोग पढ़–लिखकर दूसरों में ज्यादा नुख्स निकालने लग जाते हैं और अपने आपको बड़ा समझते हैं। महात्मा हमें बताते हैं कि पढ़ने का फायदा तभी है जब हममें शन्ति आए। हम खुद समझें और दूसरों को प्यार से समझाएं क्योंकि प्यार से समझाना बहुत ही कीमत रखता है। प्यार का वचन अंदर जरूर घर कर जाता है।

मिल सत संगत नाम सलाहो आतम राम सखाई हे।।

न निन्दा करने वाले को शान्ति है और न ईष्या करने वाले को ही शान्ति है। आप साध–संगत में जाएं क्योंकि संगत में जाकर ही हमें अपनी गलतियों का पता लगता है, हमारी तहकीकात मुकम्मल हो जाती है।

महात्मा बताते हैं कि दो प्रकार के आदमी हमारे नुख्स बता सकते हैं। विरोधी कहता है कि तेरे अंदर यह नुख्स है, हमारा धर्म बनता है

कि हम प्यार से उस नुख्स को अपने अंदर से निकाल दें और विरोधी के शुक्रगुजार होएं कि तूने हमारा नुख्स बताया या कोई महात्मा कहानी बनाकर बता देता है। सन्त कहते हैं कि आप किसी की निन्दा क्यों करते हैं? हर एक का लेखा–जोखा करने वाला वह परमात्मा है अगर कोई बुराई करता है तो वह अपने लिए करता है।

छोडो काम क्रोध बुरयाई।। हौमैं धंध छोडो लंपटाई।।
सतगुर सरण परो ता उबरो इयों तरीऐ भवजल भाई हे।।

अब गुरु नानक साहब कहते हैं, ''काम को छोड़ दें यह बहुत बड़ी बुराई है। काम और नाम की दुश्मनी है, काम की गिरावट नीचे की तरफ है और नाम की चढ़ाई ऊपर की तरफ है।''

कामी कबहू न गुर भजे।

काम इंसान को बेशर्म कर देता है कामी रिश्तेदारी भूल जाता है जो बेइज्जती का कारण बनता है। यह ऐसी आग है जब इंसान के अंदर भड़क उठती है तो इंसान की सुध–बुध मार देती है। कबीर साहब कहते हैंः

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे कोई सूरमा जाति वर्ण कुल खोय।

तुलसी साहब कहते हैंः

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की जब लग घट में खान।
क्या पंडित क्या मूर्खा दोनों एक समान।

जिसके अंदर काम की बुराई है, चाहे वह पढ़ा–लिखा है या अनपढ़ है दोनों ही एक जैसे हैं। आप सन्तों की संगत में जाकर नाम की कमाई करें आप नाम की कमाई तभी कर सकते हैं जब काम, क्रोध को छोड़ दें।

आगै बिमल नदी अगन बिख झेला।। तित्थै अवर न कोई जीउ इकेला।।
भड़ भड़ अगन सागर दे लहरी पड़ दझेंह् मनमुखताई हे।

महात्माओं ने ग्रंथ हमें डराने के लिए नहीं लिखे, वे अनुभवी पुरुष होते हैं उन्होंने जो कुछ अनुभव के जरिए अपनी आँखों से देखा होता है उसे बयान करते हैं। आप गरूड़ पुराण, नासीकेत पुराण या किसी भी महात्मा की बानी पढ़कर देखें। मुसलमानों की पवित्र किताब कुरान में भी इस नदी का जिक्र है, किसी सन्त ने इसे बेतरणी नदी, किसी सन्त ने इसे गलीच नदी कह दिया कि इस नदी में आत्मा को गोते दिए जाते हैं।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जब मौत आएगी तो आपने अकेले ही जाना है, उस समय न माता ने साथ जाना है न बहन–भाई ने साथ जाना है और न ही धन–दौलत ने साथ जाना है। हम दुनिया में भी देखते हैं अगर मकानों को आग लग जाए तो किस तरह उसमें से लहरे उठती हैं इसी तरह उस नदी में से आग की लहरें उठती हैं। यहां तो हमने मन के कहने पर जानवरों के गले काटे, इंसानों को कत्ल करके गाजर मूली बनाया तो उसका कष्ट हमने ही भोगना है। उस नदी को पार करने के लिए हमने भजन करना है, सतगुरु का सहारा लेना है, नाम का सहारा लेना है।

गुर पह मुकत दान दे भाणै।। जिन पाया सोई बिध जाणै।।
जिन पाया तिन पूछो भाई सुख सतगुर सेव कमाई हे।।

अब आप प्यार से कहते हैं कि मुक्ति प्राप्त करनी परमात्मा से मिल लेना हमारे अपने बस में नहीं है। यह परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है कि मैंने किसे इस जेल खाने से निकालना है और किसे अभी यहां रखना है। मैंने शुरु में ही बताया था कि परमात्मा ने सब कुछ अपने हाथ में रखा है। वह आप ही परवरिश करता है आप ही अपनी जानकारी देने के लिए किसी महात्मा का तन धारण करके संसार में आता है।

अब आप कहते हैं कि जिन्हें वह मुक्त करना चाहता है उन्हें किसी ऐसे महात्मा की सोहबत में लेकर जाता है जिसने जीते जी मुक्ति हासिल की है, परमात्मा से प्यार प्राप्त किया है। वह सुनी सुनाई बातें नहीं कहता।

हमें अंधविश्वास नहीं देता और कहता है कि आओ, करो, देखो और अपने घर पहुँचो। जिस तरह परमात्मा हर एक को रोशनी, हवा मुफ्त देते हैं इसी तरह महात्मा भी अपनी तालीम का किसी से कोई मुआवजा नहीं लेते अगर कोई मुफ्त का नौकर है तो वह महात्मा है।

कोटन में कोऊ जो भजन राम का पावे।

ऐसे महात्मा न हमारी पहले की बनी हुई समाज तोड़ते हैं, न नई बनाते हैं, न हमें लड़ना–भिड़ना सिखाते हैं। वे तो हमसे भक्ति करवाकर हमें परमात्मा से मिलवाने के लिए आते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है।'' आलिम फाजिल, गुणी ज्ञानी बहुत मिल जाएंगे लेकिन जिसने खुद पाया है वही हमें सिखा सकता है आप उसके पास जाएं। चाहे वहां आपको खुष्क रोटियां मिलें, जमीन पर सोना पड़े फिर भी वह आपके लिए फायदेमंद है।

गुर बिन उरझ मरह् बेकारा।। जम सिर मारे करे खुआरा।।
बांधे मुकत नाहीं नर निदंक डूबेंह् निंद पराई हे।।

आप प्यार से कहते हैं कि जब तक ऐसा महात्मा नहीं मिलता तब तक जिंदगी के सारे श्वास व्यर्थ चले जाते हैं।

लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।

कबीर साहब कहते हैं कि हमारा वही समय लेखे में है जिसमें हमें मालिक की भक्ति का वरदान मिल गया, नाम मिल गया और हम नाम की कमाई करने लगे। आप कहते हैंः

जा दिन भेंटे साध संग उहां दिन बलिहारी।

सन्त कहते हैं कि जब हमें भक्ति का मौका मिला, नाम मिला हमारा वही दिन पवित्र था। हम किसी समाज के साथ, अखौती चीजों के साथ

बंध जाते हैं और जो हमारे तरीके से भक्ति नहीं करता हम उनकी निन्दा करते हैं अगर हम ग्रंथ पूजते हैं लेकिन दूसरा नहीं पूजता तो हम उनके साथ लड़ते हैं। कोई मूर्ति पूजा करता है अगर दूसरा मूर्ति पूजा नहीं करता तो हम जाकर उनसे लड़ने लग जाते हैं, निन्दा करने लग जाते हैं कि इसकी भक्ति ठीक नहीं। अगर समझाना है तो उसे प्यार से समझा लें कि देख प्यारेया, तू जो कुछ करता है उसका कोई फायदा नहीं। मैं जो करता हूँ उससे मेरा फायदा हुआ है अगर तेरी समझ में आता है तो तू भी फायदा उठा सकता है। किसी के साथ लड़ने या निन्दा करने का क्या फायदा?

सन्त महात्मा कहते हैं कि हम एक को खुश करते हैं दूसरे से द्वेत करते हैं लेकिन महात्मा हमें आजाद कर देते हैं। महात्मा कहते हैं कि परमात्मा ने कोई कौम–मजहब नहीं बनाया, **परमात्मा प्यार का समुंद्र है।** परमात्मा ने तो इंसान बनाया है किसी पर लेबल लगाकर नहीं भेजा कि तू हिन्दु है, तू सिक्ख है, ईसाई या मुसलमान है। न ही उस परमात्मा ने यह कहा है कि मैं हिन्दुओं को मिलूंगा मुसलमानों को नहीं मिलूंगा या सिक्ख मेरे नजदीक हैं।

जाति पाति पूछे न कोई हरि को भजे सो हरि का होई।

परमात्मा प्यार का समुंद्र है। जो परमात्मा की भक्ति करता है परमात्मा उसका है। आसमान में सूरज चढ़ता है उसमें से कितनी किरणें जमीन पर आती हैं कभी किरणों ने कहा है कि मैं हिन्दुओं को प्रकाश करती हूं, मुसलमानों को नहीं या सिक्खों को प्रकाश करूंगी ईसाइयों को नहीं। उसका किसी जाति के साथ द्वेत–भाव नहीं होता इसी तरह परमात्मा एक प्रकाश है। हम आत्माएं उसमें से निकली हुई किरणें हैं, जब परमात्मा की कोई जाति नहीं तो आत्मा की क्या जाति है? बुल्लेशाह ने कहा थाः

अमला ऊपर होण नबेड़े खड़ी रहण गिया जातां।

भ्रावा, किसी ने भी नहीं पूछना कि तेरी जाति सैयद थी, तू पंडित या सिक्ख था वहां तेरे अमल देखे जाएंगे। मौहम्मद साहब ने अपने शिष्यों से कहा था, ''मैं आपकी अगुवाही नहीं भरूंगा, आपके अमल ही आपकी अगुवाही भरेंगे।'' गुरु नानकदेव जी ने भी कहा हैः

गुरु पीर हामी तां भरे जे मुरदार न खाई।

आप गुरु पीर के कहे अनुसार चलें, आगे चलकर हमारे अमल ही हमारे गवाह होंगे।

बोलो साच पछाणो अंदर।। दूर नाहीं देखो करनंदर।।
बिघन नाहीं गुरमुख तर तारी इयों भवजल पार लंघाई हे।।

सन्तजन हमें समझाते हैं कि भवजल से तरने का यही तरीका है कि अपने ख्यालों को पलटा देकर उस 'शब्द' के साथ जुड़ें। आत्मा 'शब्द' पर सवार होकर ही इस भवजल से तर सकती है।

देही अंदर नाम निवासी।। आपे करता है अबिनासी।।
ना जीउ मरै न मारया जाई कर देखै शबद रजाई हे।।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि मैंने जिस नाम की महिमा की है उस नाम के बिना मुक्ति नहीं, सतगुरु के बिना नाम नहीं मिलता। पढ़ने से, निन्दा करने से शान्ति नहीं, शान्ति है तो नाम में है। कहीं दिल में ख्याल हो कि वह नाम पढ़ने, लिखने और बोलने में है या किसी भाषा में है। यह बिना लिखा कानून बिना बोली भाषा है। हजरत बाहू कहते हैंः

जबानी कलमा हर कोई आखे दिल दा पढ़दा कोई हू
जित्थे कलमा दिल दा पढ़दे ओत्थे जीभा मिले न ढोई हू।
जुबान न फरके होठ न हिल्लण खास नवाजी सोई हू
कलमा मुर्शिद पढ़ाया मैंनू मैं सदा सुहागण होई हू।

वह कलमा, मुर्शिद सतगुरु पढ़ाते हैं। गुरु अंगददेव जी ने भी कहा हैः

अक्खां बाजो देखना बिन कन्नी सुनना, पैरां बाजों चलना बिन हत्थी करना।
जीभा बाजो बोलना ऐयो जीवित मरना, नानक हुक्म पछाण के ऐयों खसमें मिलना।।

यह आँखों के बिना देखना है क्योंकि हमारी ये आँखें तो यहीं रह जाएंगी। कानों के बिना सुनना है क्योंकि ये कान उस आवाज को कहां सुन सकते हैं यह तो बाहर की आवाज सुनने के लिए एक यंत्र है। आत्मा मरती नहीं है, हमारे शरीर जन्मते–मरते हैं। मरने के बाद शरीर की तीन गति होती हैं मिट्टी में दफना देते हैं तो कीड़े खा जाते हैं अगर जला देते हैं तो राख बनकर उड़ जाती है या जानवरों का खाज बन जाते हैं। जानवर खाकर उसका बिष्टा करके छोड़ देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

डूबो गे रे बाप रे बहु लोगन की कान
तब कुल किसका लाज सी जब तक धरयो मसान।

मसानों में जाकर पता चलेगा कि किस जाति को मौत आती है और किसको नहीं। आसमान एक है धरती एक है और पैदा करने वाला भी एक ही है। परमात्मा एक है उसके मिलने का तरीका भी एक है फिर भी हम निन्दा करते हैं तो परमात्मा की ही करते हैं। बुरा कहते हैं तो परमात्मा को ही कहते हैं।

ओह निरमल है नाहीं अंधिआरा।। ओह आपे तखत बहै सचयारा।।
साकत कूड़े बंध भवाईऐ मर जनमेंह् आई जाई हे।।
गुर के सेवक सतगुर प्यारे।। ओय बैसेंह् तखत सो शबद वीचारे।।
तत लहै अंतरगत जाणेंह् सतसंगत साच वडाई हे।।
आप तरै जन पितरां तारे।। संगत मुकत सो पार उतारे।।
नानक तिस का लाला गोला जिन गुरमुख हर लिव लाई हे।।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

भजन-सिमरन कब करना चाहिए

10,11 मई 1977 सनबोंटन, अमेरिका

एक प्रेमी: *क्या नियमित कसरत नींद से बचने के लिए और अभ्यास के दौरान होने वाले दर्द को कम करने में सहायक सिद्ध होगी?*

बाबा जी: कसरत का सम्बन्ध हमारे जिस्म से होता है, कसरत करने से हमारा जिस्म ही हृष्ट-पुष्ट होगा लेकिन यह भजन-अभ्यास या नींद के लिए कोई मदद नहीं करेगी। कसरत जिस्म के लिए अच्छी है, इससे जिस्म तंदुरुस्त रहता है इसलिए कसरत करनी चाहिए। अगर आप यह कहें कि कसरत करने से हम नींद से बच जाएंगे या हमारी सुरत शब्द के साथ लग जाएगी तो ऐसा नहीं है, इसका अभ्यास के साथ कोई ताल्लुक नहीं है।

एक प्रेमी : *मुझे दो महीने पहले नामदान मिला। उस समय मुझे अभ्यास के दौरान स्थिर बैठने की इतनी समस्या नहीं थी लेकिन अब वह समस्या बहुत बढ़ती जा रही है, मैं ज्यादा देर तक स्थिर नहीं बैठ सकती और दर्द भी बहुत तेज होता जा रहा है। क्या यह इसलिए हो रहा है कि मैं दुनिया में ज़्यादा हूँ या मेरा मन मेरे साथ आखिरी मिनट तक लड़ रहा है कि कहीं मैं उसके पंजे से निकल न जाऊं?*

बाबा जी : हम जब भी अभ्यास करेंगे तभी मन हमारे पीछे लग जाएगा। नाम लेने के बाद ही मन के साथ हमारा संघर्ष शुरू हो जाता है। हुजूर एक बड़ी सुन्दर मिसाल देकर समझाया करते थे कि जब तक ओपोजीट पार्टी गवर्नमेंट की खिलाफत नहीं करती तब तक गवर्नमेंट उन्हें कुछ नहीं कहती लेकिन जिस दिन ओपोजिट पार्टी गवर्नमेंट की खिलाफत करती है तो वक्त की गवर्नमेंट फौरन उन्हें कुचल देती है, पकड़कर जेल में डाल देती है। इसी तरह जब तक हम काल या मन का कहना मानते हैं

तब तक मन हमें कुछ नहीं कहता लेकिन जब हम उसके पंजे से आजाद होना चाहते हैं और अपनी आत्मा को सतलोक ले जाना चाहते हैं तो उसी वक्त मन हमारे पीछे लग जाता है। मन हर तरीके से सतसंगी को अभ्यास से हटाता है, चाहे मित्र बनकर बताए कि तुमने अभ्यास से क्या लेना है? चाहे दुश्मन बनकर धमकाने लग जाए या कोई रोग लगाना शुरू कर दे।

प्रेमी: *मैं दो सवाल पूछना चाहूंगा, पहला सवाल यह है क्या बीमार होने पर भी अभ्यास कर सकते हैं और दूसरा सवाल यह है कि अगर यहाँ आपके साथ बैठकर अभ्यास अच्छा हुआ हो और आपके दर्शन प्राप्त करने के बाद जब आप हॉल से चले जाएं और हम ज़्यादा अभ्यास करने के निश्चय से वापिस अभ्यास पर बैठ जाएँ लेकिन बाद में हमें अभ्यास में बैठे हुए नींद आ जाए तो क्या आपके साथ बैठे हुए जो अभ्यास किया था, उसका फल भी खत्म हो जाएगा?*

बाबा जी: बीमारियों के भी दर्जे होते है, कई बीमारियां ऐसी होती है जिसमें इंसान बैठ नहीं सकता अगर हम बैठ नहीं सकते तो लेटे हुए सिमरन करना चाहिए। अगर बैठ सकते हैं तो बैठकर या दीवार के सहारे बैठकर सिमरन कर सकते हैं अगर हम बीमारी की हालत में अभ्यास करते हैं तो हमें ज़रूर उस बीमारी का दुख सहने की ताकत मिलेगी। कई बार तो ऐसा होता है कि जब बीमारी हम पर हमला करती है और हम अपना सिमरन शुरू कर देते हैं तो हमें पता ही नहीं चलता कि हमारी बीमारी का वक्त कब गुज़र गया।

यहाँ से जाकर किया गया अभ्यास भी किसी हद तक ठीक ही होता है इसीलिए कहा जाता है कि आप ज़्यादा बातें न करें अगर आपने कोई सेवा करनी है तो उठकर अपनी सेवा करें, ज्यादा न बोलें। भजन में बैठकर सोने की आदत आपको हमेशा ही दुख देगी अगर आप एक दिन भजन में सोएँगे तो रोज़ ही सोने लग जाएंगे। कई बार ऐसा होता है कि अभ्यासी

आदमी अभ्यास करके सो जाता है फिर उसे बहुत ही गंदे सपने आने शुरू हो जाते हैं। जब वह उठता है तो बहुत ही परेशान होकर उठता है। आप सोचकर देख लें कि बैठा तो भजन में था लेकिन गंदे सपनों में खो गया।

मैं सबको यही सलाह देता हूँ कि आप अपने समय का बंटवारा कर लें कि मुझे इस वक्त भजन करना है, इस वक्त सोना है और इस समय दुनिया के कारोबार करने हैं। अभ्यास में बैठे हुए कभी भी सोने की कोशिश न करें बल्कि जब आपकी सोने वाली अवस्था हो तो उस अवस्था का फायदा उठाएं और तेज सिमरन करें क्योंकि उस वक्त हमारी आत्मा शरीर को छोड़ना चाहती है इसलिए शरीर को आराम महसूस होता है लेकिन हम उस आराम में आकर सो जाते है और भजन करना छोड़ देते हैं।

प्रेमी : *जो जवाब आपने मुझे पहले दिया था मेरे ख्याल से अब मुझे उसकी चिंता नहीं करनी चाहिए। अभी उनकी पावर काम कर रही है तो मुझे अपने जिस्म का ख्याल रखना चाहिए। महाराज जी की तवज्जो तो वहां पर है लेकिन मेरी तवज्जो उनकी तरफ नहीं है, अब मुझे जाग जाना चाहिए ताकि मैं उनसे मिल सकूं।*

बाबाजी: मैंने कल उस पावर की तवज्जो के बारे में कछुए की मिसाल देकर समझाया था कि कछुआ कभी भी अपना ध्यान अपने अंडों से नहीं हटाता इसी तरह सतगुरु पावर कभी भी अपने शिष्यों से अपनी तवज्जो नहीं हटाती। बेशक शिष्य तवज्जो न दे या गुरु को ही छोड़ जाए लेकिन गुरु जिसे नाम दे देते हैं उसे कभी नहीं छोड़ते।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के ज़माने का एक बहुत ही मशहूर वाक्या है। उन दिनों मुग़ल बादशाह हिन्दुस्तान में बहुत जुल्म करते थे, गुरु गोबिंद सिंह जी को जुल्म का सामना करना पड़ा और मुगलों के खिलाफ तलवार उठानी पड़ी। मुग़ल फ़ौज उनके पीछे लग गई और उनके किले को घेरकर बैठ गई। जब मुग़ल फ़ौज के घेरा डाले हुए छह महीने हो गए और किले

के अंदर खाने के लिए कुछ भी नहीं था और वहाँ रहने वाली संगत भूखी मरने लगी तो वे कहने लगे कि हमें मुगलों से संधि कर लेनी चाहिए।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज ने कहा कि आप दुख में घबराएं नहीं लेकिन वे सब इतना घबरा गए और कहने लगे, ''अब हम यहाँ नहीं रह सकते।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''आपकी मर्ज़ी है अगर आप रहेंगे तो अच्छी बात है।'' वे सब गुरु गोबिंद सिंह जी को एक कागज़ पर लिखकर दे आए कि आप हमारे कुछ नहीं लगते और वापिस अपने घर चले गए। जब अपने घरों को वापिस आए तब उनकी पत्नियों ने उन सबको ताने मारे कि आप सब मर्द होकर गुरु को पीठ दिखा आए, आप हम औरतों वाले कपड़े पहनकर बैठ जाएं, हम सब उस जंग में जाती हैं।

जब पत्नियों ने इस तरह के ताने मारे तो जो चालीस शिष्य गुरु साहब को छोड़कर आए थे, वे सब वापिस चले गए और आगे श्री मुक्तसर साहिब जाकर मुग़ल फ़ौज का सामना किया। उस वक्त गुरु गोबिंद सिंह जी दूर थे लेकिन जब वे आए तो उनमें से सिर्फ एक शिष्य महा सिंह ही आखिरी साँसे ले रहा था। गुरु गोबिंद सिंह जी ने उसे पकड़कर उठाया और कहा, ''महा सिंह, मांगों क्या मांगते हो?'' महा सिंह ने कहा, ''आप सिर्फ हमारी टूटी को जोड़ दें, हम और कुछ नहीं मांगते। हम जो बेदावा आपको लिखकर दे आए थे, आप उसे फाड़ दें।''

गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा कि तुम उसकी चिंता मत करो, कुछ और मांगना है तो मांग लो। महा सिंह ने कहा, ''और कुछ नहीं चाहिए।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने वह कागज उसके सामने कर दिया और कहा, ''देखो, इसमें आप लोगों ने लिखा था कि हम आपके शिष्य नहीं है लेकिन मैंने तो कहीं नहीं लिखा कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ।''

गुरु कभी भी अपने शिष्य को नहीं छोड़ता, चाहे शिष्य गुरु को छोड़ जाए। गुरु नानक साहब कहते है कि गुरु के अंदर यही सबसे बड़ी सिफ़त

होती है कि वह जिसे भी एक बार अपनी शरण में ले लेते हैं, जिसे नामदान दे देते हैं, उसे कभी नहीं छोड़ते। यह गुरु की बहादुरी है, इसमें शिष्य की कोई बहादुरी नहीं।

हमें ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि गुरु हमें तो ले ही जाएंगे और हम विषय–विकारों में मस्त रहें। रोज़ का भजन–अभ्यास करना फल को पकाना है। जब फल पक जाता है तो वह ज़मीन पर आ गिरता है, तब न उस पेड़ को कोई कष्ट होता है और न ही फल को कोई कष्ट होता है।

इसी तरह जब हम रोज़ अभ्यास करते हैं, अपनी आत्मा को मन के पंजे से आज़ाद करके शब्द के साथ जोड़ लेते हैं, तब न गुरु को तकलीफ होती है और न ही जीते जी हमें कोई तकलीफ होती है।

जब हम नाम ले लेते हैं तब शुरू–शुरू में अच्छा अभ्यास करते हैं। उत्साह, प्यार और मोहब्बत रखते हैं लेकिन थोड़े दिन बाद मन हमें अंदर से खुश्क कर देता है फिर हम कभी एक दिन अभ्यास नहीं करते, कभी दो दिन, कभी चार दिन अभ्यास नहीं करते और कभी–कभी तो हम महीने–महीने तक भी अभ्यास नहीं करते। कबीर साहब कहते हैं:

जैसी लौ पहिले लगी, तैसी निबहै ओर।
अपनी देह की क्या गत, तारै पुरुष करोर।

पहले दिन जैसा हमारा प्यार सतगुरु से लगता है अगर हम उतना ही निभा लें, कभी भी सतगुरु पर अभाव न लाएं। कभी भी उनकी बताई गई युक्ति करना न भूलें तो अपनी देह की गति की तो क्या बात है, वह तो तर ही जाएगी लेकिन वह और भी करोड़ों पुरुषों का उद्धार कर सकती है।

***

2025 में 16 पी.एस.आश्रम राजस्थान मे सतसंगों के कार्यक्रम

1. 28 फरवरी, 01 व 02 मार्च
2. 02, 03, 04, 05 व 06 अप्रैल
3. 07, 08, 09, 10, 11 व 12 सितम्बर
4. 03, 04 व 05 अक्टूबर
5. 31 अक्टूबर, 01 व 02 नवम्बर
6. 05, 06 व 07 दिसम्बर

RNI No - RAJHIN/2003/9899